हिन्दी दैनिक

लखनऊ जंक्शन

RNI NO.-UPHIN/2015/64743 Email-lkojunction@gmail.com

वर्ष: 10 अंक: 327 लखनऊ, शनिवार 30 अगस्त 2025 पृष्ठ: 04 मूल्य: 01 रूपये

'हर खिलाड़ी समाज का हीरो, राष्ट्र के प्रति समर्पण की प्रेरणा : सीएम योगी'

-मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेजर ध्यानचंद की जयंती पर उनकी स्मृतियों को किया नमन

-सीएम बोले- खेल जीवन का अनुशासन, समन्वय और टीमवर्क प्रज्जवलित करता है राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना

-हर कमिश्नरी में स्पोर्ट्स कॉलेज और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की हो रही स्थापना : सीएम

-ग्राम पंचायत से जनपद स्तर तक प्रदेश सरकार कर रही खेल अवसंरचना का विस्तार : मुख्यमंत्री

-खेल दिवस पर सीएम योगी ने 88 पदक विजेता खिलाड़ियों का किया सम्मान

-कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने सहायक खेल प्रशिक्षकों को प्रदान किया नियुक्ति पत्र

-विभिन्न जनपदों में खेल अवस्थापना सुविधाओं के निर्माण का किया लोकार्पण

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी को नमन करते हुए कहा कि हर खिलाड़ी अपने आप में समाज के लिए एक हीरो होता है। हर नागरिक को एक खिलाड़ी की तरह अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव से आगे बढ़ने, खेल जीवन के अनुशासन को बनाए रखने, समन्वय स्थापित करने और जीवन में उत्कृष्टता के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयासों का हिस्सा होना चाहिए। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक विजेता उत्तर प्रदेश के 88 खिलाड़ियों को पुरस्कार राशि प्रदान की और सहायक खेल प्रशिक्षकों को नियुक्ति पत्र वितरित किए। समारोह में खेल मंत्री ने मुख्यमंत्री को अंगवस्त्र पहनाकर और मोमेंटो देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने पूर्व ओलंपियन और अर्जुन पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ियों सहित नेशनल गेम्स में मेडल जीतने वाले खिलाड़ियों का सम्मान किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न जनपदों में खेल अवस्थापना सुविधाओं के निर्माण का लोकार्पण भी किया।

'मेजर ध्यानचंद को नमन'

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब मेजर ध्यानचंद जी की बात आती है तो हर भारतीय के मन में हॉकी की स्टिक नजर आने लगती है। 1928, 1932 और 1936 तीन ओलंपिक में स्वर्ण पदक दिलाकर उन्होंने भारत की हॉकी को वैश्विक पहचान दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश का सबसे प्रतिष्ठित खेल रत्न पुरस्कार किसी नेता नहीं, बल्कि मेजर ध्यानचंद के नाम पर समर्पित किया गया। उत्तर प्रदेश के लिए यह इसलिए भी गौरव की बात है क्योंकि यह उनकी जन्मभूमि है। उनकी स्मृति में मेरठ में प्रदेश की पहली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी का नामकरण मेजर ध्यानचंद जी के नाम पर किया गया है और इस सत्र से वहां पाठ्यक्रम प्रारंभ हो गया है।

'खेलों में नई क्रांति की शुरुआत'

मुख्यमंत्री ने विजयंत खंड स्थित मोहम्मद शाहिद हॉकी स्टेडियम में स्पोर्ट्स हॉस्टल बनाम स्पोर्ट्स कॉलेज का रोमांचक हॉकी मैच भी देखा। उन्होंने कहा कि यह खेल कितना फास्ट है, कितनी ऊर्जा और टीमवर्क मांगता है। यह मैच इसका जीवंत उदाहरण है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में खेलो इंडिया से फिट इंडिया मूवमेंट तक, सांसद एवं विधायक स्तर की प्रतियोगिताओं तक, देश में खेलों की एक नई क्रांति आई है। प्रदेश सरकार ने नई खेल नीति लागू की है, जिससे खिलाड़ियों को मंच, कोच और बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध हो रहा है।

'ग्राम से जनपद तक खेल ढांचा'

मुख्यमंत्री ने कहा कि हर कमिश्नरी में एक स्पोर्ट्स कॉलेज की स्थापना की जा रही है। विभिन्न खेलों के लिए इन कॉलेजों में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस विकसित किए जाएंगे। प व ओलंपियन/कॉमनवेल्थ/एशियाड/नेशनल गेम्स मेडलिस्टों को कोच बनाकर नई प्रतिभाओं को तराशा जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि हर ग्राम पंचायत में खेल का मैदान, हर विकासखंड पर मिनी स्टेडियम और हर जनपद में एक स्टेडियम निर्माण की कार्यवाही युद्धस्तर पर जारी है। ओपन जिम के निर्माण व युवा कल्याण विभाग के माध्यम से युवक मंगल दल और महिला मंगल दल को स्पोर्ट्स किट उपलब्ध कराई जा रही हैं।

'यूपी की हॉकी विरासत को किया याद'

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश ने हॉकी में अनेक दिग्गज दिए हैं। मेजर ध्यानचंद, के. डी. सिंह 'बाबू', मोहम्मद शाहिद, रवींद्र पाल, सैयद अली, डॉ. आर. पी. सिंह, सुजीत कुमार, रजनीश मिश्रा, मोहम्मद शकील, देवेश चौहान, एम. पी. सिंह, जगवीर सिंह, विवेक सिंह, राहुल सिंह, तुषार खांडेकर, दानिश मुर्तजा, ललित उपाध्याय, राजकुमार पाल, रंजना श्रीवास्तव, मंजू बिष्ट, पुष्पा श्रीवास्तव, रजनी जोशी, वंदना कटारिया, रितुषा कुमारी आर्या जैसे हॉकी खिलाड़ियों प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाया। पेरिस ओलंपिक में भारतीय टीम को मेडल दिलाने वाले ललित उपाध्याय और राजकुमार पाल उत्तर प्रदेश की ही देन हैं।

'खेल से बनता है सशक्त भारत'

सीएम ने कहा कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। व्यक्ति यदि खेलकूद से जुड़ेगा तो राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव विकसित होगा। शरीर के साथ मन भी तंदुरुस्त रहेगा और वह स्वस्थ शरीर–स्वस्थ मस्तिष्क के साथ सशक्त भारत के निर्माण में योगदान देगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय खेल दिवस के उपरांत 17 सितंबर से 2 अक्टूबर के बीच देशभर में सांसद खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। इससे पूर्व विधायक खेलकूद प्रतियोगिताएं खेल एवं युवा कल्याण विभाग आयोजित कराएगा।

'खिलाड़ियों को मिल रहा रोजगार'

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश में सरकारी नौकरियों में खिलाड़ियों के लिए 2 प्रतिशत हॉरिजेंटल आरक्षण लागू किया गया है। अब तक 500 खिलाड़ियों को उत्तर प्रदेश पुलिस बल और अन्य विभागों में समाहित किया जा चुका है। उत्तर प्रदेश के खेल सचिव सुहास एल. वाई. का जिक्र करते हुए सीएम योगी ने कहा कि वह स्वयं पैरालंपिक में मेडल जीत चुके खिलाड़ी हैं, जो खिलाड़ियों के हित में नीतिगत सुधार कर रहे हैं।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री गिरीश चंद्र यादव, लखनऊ की महापौर सुषमा खर्कवाल, सांसद ब्रजलाल, संजय सेठ, विधायक जय देवी, योगेश शुक्ला, इंजीनियर अवनीश कुमार सिंह समेत अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

'सीएम योगी ने हॉकी स्टिक उठाई, शॉट लगाया और फिटनेस की शपथ दिलाई'

सीएम योगी ने कार्यक्रम के दौरान हॉकी स्टिक से गेंद को हिट करके स्टेट हॉकी प्रतियोगिता का भी शुभारंभ किया। यही नहीं, उन्होंने कुछ देर तक हॉकी मैच भी देखा। इससे पहले मुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों को खेल गतिविधियों में सम्मिलित होने और फिटनेस के प्रति जागरूक रहने की शपथ भी दिलाई। उन्होंने शपथ दिलाई, श्मैं शपथ लेता हूं कि मैं खुद को सार्वजनिक रूप से फिट, मानसिक रूप से मजबूत और भावनात्मक रूप से संतुलित बनाऊंगा। मैं अपने परिवार और दोस्तों को हर दिन एक खेल और फिटनेस गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करूंगा। मैं हर खेल में उत्कृष्टता, सम्मान और खेल के अलौकिक मूल्यों को आत्मसात करने का प्रयास करूंगा। मुख्यमंत्री ने सभी खिलाड़ियों का परिचय भी प्राप्त किया और उनके खेल और पढ़ाई के विषय में भी बात की। मैच के अंत में मुख्यमंत्री के समक्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

'पुरस्कार राशि और प्रोत्साहन'

अपने संबोधन में सीएम योगी ने प्रदेश के खिलाड़ियों को दिए जा रहे प्रोत्साहन का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि ओलंपिक, एशियन गेम्स, कॉमनवेल्थ गेम्स, वर्ल्ड चौंपियनशिप, नेशनल स्टेट गेम्स में एकल और टीम गेम में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को प्रदेश सरकार आर्थिक रूप से मदद कर रही है। उनके अनुसार...

ओलंपिक : एकल–स्वर्ण 6 करोड़, रजत 4 करोड़, कांस्य 2 करोड़; टीम स्वर्ण 3 करोड़, रजत 2 करोड़, कांस्य 1 करोड़।

एशियन गेम्स : स्वर्ण 3 करोड़, रजत 1.5 करोड़, कांस्य 75 लाख।

कॉमनवेल्थ गेम्स : स्वर्ण 1.5 करोड़, रजत 75 लाख, कांस्य 50 लाख।

वर्ल्ड चौंपियनशिप : स्वर्ण 1.5 करोड़, रजत 75 लाख, कांस्य 50 लाख।

नेशनल/स्टेट गेम्स : एकल स्वर्ण 6 लाख, रजत 3 लाख, कांस्य 2 लाख; टीमकृस्वर्ण 2 लाख, रजत 1 लाख, कांस्य 50 हजार।

प्रतिभाग प्रोत्साहन : ओलंपिक में हिस्सा लेने पर 10 लाख, कॉमनवेल्थ व एशियन गेम्स में प्रतिभाग पर 5–5 लाख।

सम्मानित पुरस्कृत/पुरस्कार विजेता खिलाड़ियों को सहायता : अर्जुन, द्रोणाचार्य, मेजर ध्यानचंद, खेल रत्न व खेल क्षेत्र के पद्म पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ियों को 20,000 प्रतिमाह सहायता।

वृद्ध/अशक्त/विपदाग्रस्त खिलाड़ी : अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को 10,000 तथा राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को 6,000 प्रतिमाह वित्तीय सहायता।

'सीएम योगी ने इन परियोजनाओं का किया लोकार्पण'

आजमगढ़ के स्पोर्ट्स स्टेडियम में समर्पित छात्रावास भवन का जीर्णोद्धार बस्ती के स्पोर्ट्स स्टेडियम में निर्मित छात्रावास भवन का लोकार्पण पीलीभीत के बहुउद्देशीय क्रीड़ाहाल एवं प्रशासनिक भवन का जीर्णोद्धार गोरखपुर के वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज में इंडोर वॉलीबाल हॉल का जीर्णोद्धार कार्य बस्ती के स्पोर्ट्स स्टेडियम में निर्मित खेल अवस्थापनाओं के जीर्णोद्धार संबंधी कार्य बांदा के स्पोर्ट्स स्टेडियम में जिम उपकरणों की स्थापना का कार्य मऊ में स्पोर्ट्स स्टेडियम में निर्मित खेल अवस्थापनाओं के जीर्णोद्धार कार्य मऊ में सिंथेटिक हॉकी मैदान के निर्माण कार्य का लोकार्पण।

संक्षिप्त समाचार

सरकार का बड़ा कदम, पीयूष गोयल बोले, जल्द उठाए जाएंगे निर्यात बढ़ाने के लिए कई उपाय

एजेंसी

नयी दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को कहा कि सरकार देश के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए घरेलू एवं वैश्विक पहुंच बढ़ाने के लिए जल्द ही कई कदम उठाएगी। गोयल ने उद्योग जगत के एक कार्यक्रम में कहा, '' मैं आप सभी को आश्वस्त कर सकता हूं कि आने वाले दिनों में सरकार प्रत्येक क्षेत्र को सहायता देने के लिए विभिन्न कदम उठाएगी। इससे घरेलू पहुंच का विस्तार होगा तथा विश्वभर के अन्य बाजारों में पूरक अवसरों की तलाश होगी जिससे हमारी वैश्विक पहुंच बढ़ेगी।

राहुल और तेजस्वी की यात्रा ने पार की सारी हदें, पीएम मोदी की मां के खिलाफ बयानों पर भड़के शाह और नड्डा

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के शीर्ष नेतृत्व ने गुरूवार को बिहार में वोटर अधिकार यात्रा में कांग्रेस–आरजेडी के मंच से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी दिवंगत मां के लिए कथित तौर पर अभद्र भाषा के प्रयोग को निंदनीय और लोकतंत्र को कलंकित करने वाला बताया है। पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंद्रीय गृह मंत्री ने अभद्र भाषा वाले बयान की आलोचना करते हुए राहुल गांधी और तेजस्वी यादव से अविलंब माफी मांगने को कहा है। जेपी नड्डा ने एक्स पर अपने पोस्ट में एक वीडियो शेयर करते हुए लिखा कि कांग्रेस की तथाकथित वोटर अधिकार यात्रा में जिस तरह से कांग्रेस–आरजेडी के मंच से देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दिवंगत मां को गाली दी गई, वह घोर निंदनीय और भर्त्सनीय है।

आर्थिक सुधारों की नई पहल, सरकार ने बनाई उच्च स्तरीय समिति

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वतंत्रता दिवस पर नए आर्थिक सुधारों के आह्वान के बाद केंद्र सरकार सक्रिय हो गई है। सरकार ने उन अहम क्षेत्रों की पहचान की है, जिनमें निश्चित समय सीमा के भीतर सुधार किए जाएंगे। योजना के तहत खनन और बिजली उत्पादन को दोगुना करने, बड़े निवेश आकर्षित करने, नवीकरणीय ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन को बढ़ावा देने, लघु एवं उच्च मॉड्यूलर रिएक्टर विकसित करने और कोयला गैसीकरण जैसी परियोजनाओं को प्राथमिकता दी गई है। इन परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए विकसित भारत लक्ष्यों पर एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया है, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सदस्य राजीव गाबा करेंगे। समिति आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को गति देने के लिए रोडमैप तैयार करेगी। साथ ही, एक दूसरी समिति गैर–वित्तीय नियामकीय सुधारों पर काम करेगी। यह समिति मौजूदा कानूनों की प्रासंगिकता की समीक्षा करेगी और अनुपालन का बोझ कम करने के लिए स्व–अभिप्रमाणन व तीसरे पक्ष की निगरानी जैसे विकल्पों पर विचार करेगी।

एसजेवीएन मानव संसाधन प्रबंधन में स्कोप एमिनेंस अवार्ड से सम्मानित

बीएनई

शिमला। एसजेवीएन को मानव संसाधन प्रबंधन में प्रतिष्ठित 'स्कोप एमिनेंस' अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड आज नई दिल्ली में भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा भूपेन्द्र गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा अजय कुमार शर्मा, निदेशक (कार्मिक) एसजेवीएन को स्कोप द्वारा आयोजित एक समारोह के दौरान प्रदान किया गया। भूपेन्द्र गुप्ता ने सभी कर्मचारियों को बधाई दी तथा कहा कि यह अवार्ड एसजेवीएन की अपने कर्मचारियों के हित और विकास के प्रति कल्याणकारी नीति निर्माता के तौर पर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस अवसर पर अजय कुमार शर्मा ने कहा कि इस तरह के अवार्ड संगठन को प्रतिबद्ध वर्कफोर्स द्वारा संचालित एक गतिशील संगठन बनने की दिशा में अपनी यात्रा जारी रखने के लिए प्रेरित करते हैं। अवार्ड की विभिन्न श्रेणियों में लगभग 200 संगठनों ने भाग लिया। यह अवार्ड एसजेवीएन द्वारा प्रगतिशील एवं समावेशी कार्य संस्कृति विकसित करने के निरंतर संकल्प की पुष्टि है। एसजेवीएन की सशक्त मानव संसाधन नीतियाँ हैं, जिनमें नेतृत्व विकास, विविधता एवं समावेशन, सक्सेशन प्लानिंग, एम्प्लोयी एंगेजमेंट और वेलफेयर संबंधी पहल शामिल हैं, जिनसे संगठनात्मक प्रदर्शन और एम्प्लोयी सेटिस्फेक्शन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, समग्र कल्याण पर केंद्रित व्यापक लाभ योजनाएँ और कल्याण कार्यक्रम, कर्मचारियों के मनोबल को सुदृढ़ता प्रदान करते हैं। वर्ष 1973 में गठित, स्टैंडिंग कॉन्फ्रेंस ऑफ पब्लिक एंटरप्राइजेज (स्कोप) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (पीएसई) का सर्वोच्च निकाय है। स्कोप, मैनेजमेंट और गवर्नेंस के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले संगठनों को सम्मानित करने के लिए एमिनेंस अवार्ड प्रदान करता है।

जापान पहुचे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, हुआ जोरदार स्वागत

एजेंसी

तोक्यो। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जापान की दो दिवसीय यात्रा पर शुक्रवार को तोक्यो पहुंचे जहां वह जापान के प्रधानमंत्री शिगेरू इशिबा के साथ शिखर वार्ता करेंगे। विदेश मंत्रालय ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जापान के तोक्यो पहुंच गए हैं। प्रधानमंत्री भारत–जापान साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री शिगेरू इशिबा के साथ शाम को व्यापक चर्चा करेंगे।''अपने प्रस्थान वक्तव्य में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उनकी जापान यात्रा दोनों देशों के बीच सभ्यतागत संबंधों और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने का एक अवसर प्रदान करेगी। मोदी 29–30 अगस्त को जापान यात्रा के दौरान जापान के प्रधानमंत्री शिगेरू इशिबा के साथ वार्षिक शिखर वार्ता करेंगे। प्रधानमंत्री ने जापान यात्रा पर कहा, ''हम अपनी विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी के अगले चरण को आकार देने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। दोनों देशों के बीच साझेदारी ने पिछले 11 वर्षों में लगातार और महत्वपूर्ण प्रगति की है।उन्होंने कहा, ''हम अपने सहयोग को नयी उड़ान देने, आर्थिक व निवेश संबंधों के दायरे एवं महत्वाकांक्षाओं का विस्तार करने, कृत्रिम मेधा (एआई) व सेमीकंडक्टर सहित नयी और उभरती प्रौद्योगिकियों में सहयोग को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। जापान से मोदी 31 अगस्त से दो दिवसीय यात्रा पर चीन के शहर तियानजिन जाएंगे। रविवार को प्रधानमंत्री चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग के साथ वार्ता करेंगे, जिसमें पूर्वी लद्दाख सीमा विवाद के बाद द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य बनाने के लिए आगे के कदमों पर ध्यान केंद्रित करने की संभावना है।

बार-बार पाकिस्तान जाने वाले नहीं कर सकते असम का नेतृत्व, अमित शाह ने बोला हमला

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि असम का नेतृत्व ऐसे लोग नहीं कर सकते जो बार–बार पाकिस्तान जाते हैं। अमित शाह ने स्पष्ट तौर पर यह बात प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई के पाकिस्तान के साथ कथित संबंधों की ओर इशारा करते हुए कही। केंद्रीय गृह मंत्री ने पंचायत प्रतिनिधियों की आयोजित एक रैली को संबोधित करते हुए अगले साल मार्च–अप्रैल में होने वाले असम विधानसभा चुनाव के लिए 'युद्ध का बिगुल फूंका। उन्होंने कहा कि राज्य का प्रतिनिधित्व ऐसे नेता नहीं कर सकते जो घुसपैठियों और अतिक्रमणकारियों के प्रति सहानुभूति रखते हों। उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश भर में अनेक विकास कार्य किए हैं और असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने उस विकास को राज्य के घर–घर तक पहुंचाया है। इन कार्यों की बदौलत, भाजपा के नेतृत्व वाला

राजग अगले साल लगातार तीसरी बार असम में सरकार बनाएगा। विपक्षी कांग्रेस की आलोचना करते हुए शाह ने कहा कि असम का प्रतिनिधित्व घुसपैठियों के प्रति सहानुभूति रखने वाले और अतिक्रमण को बढ़ावा देने वाले लोग नहीं कर सकते। गौरव गोगोई के संदर्भ में अमित शाह ने कहा, ''असम का नेतृत्व ऐसे लोग नहीं कर सकते, जो अकसर पाकिस्तान जाते हैं। असम के मुख्यमंत्री और भाजपा लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता गोगोई पर उनकी पत्नी के पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई से कथित संबंधों को लेकर हमला बोलते रहे हैं। शर्मा ने दावा किया था कि गोगोई की ब्रिटिश पत्नी एलिजाबेथ कोलबर्न ने भारत और पाकिस्तान के बीच 19 बार यात्रा की थी। शाह ने कहा, ''घुसपैठियों ने हमारी हजारों एकड़ जमीन पर कब्जा कर लिया। भाजपा सरकार ने हर जगह से अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया, लेकिन गौरव गोगोई ने इसका विरोध किया. .. असम सरकार ने घुसपैठियों के अतिक्रमण से 1,29,548 एकड़ जमीन मुक्त कराई है। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि भाजपा ने घुसपैठियों को बाहर निकालकर श्रीमंत शंकरदेव और महापुरुष माधवदेव के सत्रों (वैष्णव मठों) की पवित्रता को बहाल किया है। उन्होंने यह भी दावा किया कि असम में भाजपा सरकार ने घुसपैठियों को पकड़ने के लिए विशेष अभियान शुरू किया, जो ''हमारी बेटियों से शादी करते थे। हाल के ग्रामीण चुनावों में कांग्रेस के प्रदर्शन के बारे में शाह ने कहा, ''यदि आप असम पंचायतों में कांग्रेस को ढूंढना चाहें तो आप उन्हें दूरबीन से भी नहीं ढूंढ पाएंगे।

संपादकीय

कोचिंग की मजबूरी

हाल के दिनों में कोचिंग का तेजी से बढ़ता प्रचलन अभिभावकों के बजट को बिगाड़ रहा है। छात्रों का कोचिंग जाना धीरे–धीरे अपरिहार्य माना जाने लगा है। जिसके चलते माता–पिता को अपने अन्य जरूरी खर्चों में कटौती करनी पड़ती है। हाल ही में भारत सरकार के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि देश भर के लगभग हर चार में से एक स्कूली छात्र ने इस वर्ष निजी कोचिंग ली। कुल मिलाकर देश के 27 फीसदी विद्यार्थी निजी कोचिंग लेते हैं। यह प्रतिशत शहरों में ज्यादा है, जो सर्वे में करीब 31 फीसदी पाया गया। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में शहरों की तुलना में कम– 25 फीसदी पाया गया है। पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में यह कोई वैकल्पिक सुविधा नहीं है बल्कि शिक्षा प्रणाली की विसंगतियों से अपने बच्चों को उबारकर उनके बेहतर भविष्य की आस का जरिया है। उस स्थिति से उबरने की कोशिश है जो छात्रों को परीक्षा से पूर्व तनाव व परेशानी में धकेल देती है। केंद्र सरकार के व्यापक वार्षिक माड्यूलर सर्वेक्षण यानी सीएमएस में खुलासा हुआ है कि शहरी परिवार कोचिंग पर साल में औसतन चार हजार रुपये खर्च करते हैं। वहीं उच्चतर माध्यमिक छात्रों के लिये राशि बढ़कर दस हजार रुपये हो जाती है। दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में यह खर्च कम हो जाता है। लेकिन फिर भी परिवार की आय पर दबाव जरूर बनाता है। कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के व्यापक मॉड्यूलर सर्वेक्षण (शिक्षा) के ये आंकड़े एक सच्चाई को उजागर करते हैं कि स्कूली पढ़ाई छात्रों की सभी जिज्ञासाओं को शांत नहीं कर पाती। यानी स्कूल छात्रों की परीक्षाओं के लिये अपेक्षित आत्मविश्वास प्रदान करने में पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहे हैं। जाहिर बात है कि यदि स्कूलों में पढ़ाई छात्राओं की आकांक्षाओं के अनुरूप हो और उनकी जिज्ञासा कक्षा की पढ़ाई के दौरान शांत हो जाए, तो वे कोचिंग की आवश्यकता महसूस नहीं करेंगे। सर्वे बताता है कि आज देश में 56 फीसदी छात्र सरकारी स्कूलों में शिक्षा ले रहे हैं। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह संख्या दो दिहाई है। निस्संदेह, ऐसी स्थिति में कोचिंग का बढ़ता प्रचलन आकांक्षाओं से ज्यादा व्यवस्थागत कमजोरी का संकेत है। वहीं पंजाब और हरियाण में,यह प्रचलन ज्यादा है जहां बोर्ड और प्रवेश परीक्षाओं का अधिक दबाव हावी रहता है। जिसके चलते कुकरमुत्तों की तरह कोचिंग सेंटर उग रहे हैं। नतीजा साफ है कि कक्षाओं में ठीक से पढ़ाई न होने के कारण छात्रों का ध्यान व पैसा स्कूल के समानांतर चलाए जा रहे कोचिंग सेंटरों को जा रहा है। कोचिंग सेंटर, जिनका मकसद सिर्फ मुनाफा जुटाना ही है, वे समाज में एक कृत्रिम स्पर्धा ट्यूशन पढ़ने व न पढ़ने वाले छात्रों के बीच पैदा कर रहे हैं। पारिवारिक परिस्थितियों के चलते ट्यूशन न पढ़ने वाले छात्र असुरक्षा व हीन भावना के शिकार हो जाते हैं।

दरअसल, इस समस्या का समाधान कोचिंग को बाजार हिस्सा मानकर नहीं किया जा सकता है। प्रतिबंध या सीमाएं निर्धारण से भी समस्या का समाधान करने के बजाय हम इस मुद्दे को और जटिल बना देंगे। बेहतर होगा कि स्कूल में कमजोर छात्रों को स्कूल के समय बाद अतिरिक्त कक्षाओं के जरिये मजबूती प्रदान की जाए। खासकर बोर्ड की परीक्षाओं में शामिल हो रहे छात्रों पर अधिक ध्यान व समय देकर स्कूल प्रबंधक रचनात्मक भूमिका निभा सकते हैं। जिससे अभिभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक दबाव भी नहीं पड़ेगा। अधिक विषयों के लिये योग्य शिक्षकों की नियुक्ति व रटने के बजाय समझने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देकर भी कोचिंग प्रथा को कम किया जा सकता है। इसके साथ ही स्कूलों में छात्रों का मध्यावधि मूल्यांकन भी मददगार साबित हो सकता है। राज्य बोर्डों को भी छात्रों के ज्ञान के मूल्यांकन को नया स्वरूप देना चाहिए। वे छात्रों को समझ और व्यावहारिक ज्ञान देने को प्राथमिकता दें बजाय कि रटने की प्रवृत्ति को बढ़ाने की। यदि निजी कोचिंग अपरिहार्य है तो कम आय वाले छात्रों के लिये आर्थिक सहायता नैसर्गिक न्याय करेगी। इससे शिक्षा के क्षेत्र में समानता लाना संभव है। अन्यथा कोचिंग का दायरा बढ़ता ही रहेगा। अन्यथा असमानता बढ़ेगी और कक्षाओं में छात्रों की भागीदारी कम होती जाएगी।

राशिफल

मेष :– नई सफलताओं से खुद की क्षमताओं का ऐहशास होगा। जीविका क्षेत्र में अवरोधों से मन में निराशा संभव भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में ब्यय की अपेक्षित है। सन्तत्ति एवं सन्तानोत्पत्ति के लिए प्रयास सार्थक होंगे।

बृषभः– शासन–सत्ता कें लोगों के साथ निकटता बढे.गी। नियोजित परिश्रम द्वारा कार्य सिद्धी के आसार बनेंगे। पुराने संबंधों से लाभ संभव। परिवारिक वातावरण सुखद व उत्साहपूर्ण होगा।

मिथुनः– कठिन एवं विषम परिस्थितियों के मध्य परिश्रम व लगन से प्रगति के ओर अग्रसर होंगे। समाजिक सक्रीयता से मान–प्रतिष्ठा में बृद्धि होगी। घरेलू दायित्वो के प्रति आपकी महत्ता बढे.गी।

कर्कः– कुछ भौतिक आकांक्षाएं अपनी सार्थकता हेतु मन को उद्वेलित करेंगी। निकटस्थ सम्बन्धों में भावनात्मक अपेक्षाएं कष्टकारी हो सकती है। तामसी व गैर कायरे पर आकर्षित मन पर अंकुश लगावें।

सिंहः– कुछ नई इच्छाएं बलवती होंगी। प्रयासरत् क्षेत्रों में संघर्ष संभव परन्तु निराशावादी बिचारों को मन में स्थान न दें। किसी बड़े आयोजन हेतु समुचित ब्यवस्था के लिए मन प्रयत्नशील होगा।

कन्याः– नकारात्मक चिन्ताओं को त्याग कर अपनी क्षमताओं पर भरोसा करें। नौकरी–पेशे में अधिकारियों व सहकर्मियों के सहयोग से वातावरण सुखद होगा। राजनैतिक क्षेत्र के ब्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होगा।

तुलाः– किसी नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लाएगी। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव। दुबिधाओं को त्याग कर सही व स्वच्छ योजनाओं पर केन्द्रित हों।

वृश्चिकः– कुछ महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ मन पर प्रभावी होंगी। घरेलू कायरे में ब्यस्तता बढे.गी। परिजनों के सहयोग से मन उत्साहित होगा। हंसमुख स्वभाव से आस–पास वातावरण में प्रसन्नता बिखेरेंगे।

धनुः– सम्बन्धों में ब्यवहारकुशल बनें। समाजिक व मांगलिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी संभव। कुछ महत्वपूर्ण प्रयत्न की सार्थकता आप में नए उत्साह का संचार करेगा।

मकरः– बिद्यार्थियों के लिए ग्रहों की अनुकूलता लाभप्रद होगी। कुछ महत्वाकांक्षी योजनाएं सार्थक होगी। नवीन आशाएं नवीन उत्साह लाएंगी। कार्य क्षेत्र में सम्बन्धों का भरपूर लाभ मिलेगा।

कुंभः– अन्तमरुखी स्वभाव को त्याग बहिरमुखी बनें। कुछ महत्वपूर्ण अभिलाषाओं की पूर्ति के आसार हैं। परिजनों के सुख–दुख के प्रति मन चिन्तित होगा। कार्य क्षेत्र में ब्यस्तता बढे.गी।

मीनः– पुरानी समस्याओं पर बिजय प्राप्त कर सुखद अनुभूति करेंगे। ग्रहों की अनुकूलता से कोई अवरोधित कार्य हल होने के आसार बनेंगे। समुचित परिश्रम करने में असमर्थ मन परेशान होगा।

जवान बच्चों की शादी में अभिभावकों की सहमति : परंपरा, अधिकार और सामाजिक संतुलन

– डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत जैसे सांस्कृतिक और पारिवारिक मूल्यों वाले देश में विवाह केवल दो व्यक्तियों का निजी निर्णय नहीं होता, बल्कि यह परिवार, रिश्तेदार और व्यापक समाज की भागीदारी से जुड़ी एक सामाजिक संस्था है। ऐसे में जब हरियाणा विधानसभा में दादा गौतम ने यह मुद्दा उठाया कि जवान बच्चों की शादी में माँ–बाप की सहमति अनिवार्य होनी चाहिए, तो इस पर स्वाभाविक रूप से बहस छिड़ गई। यह बहस केवल एक कानूनी प्रावधान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके केंद्र में हैंकृनैतिकता, परंपरा, संस्कृति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक प्रतिष्ठा। भारतीय संस्कृति में विवाह केवल एक सामाजिक अनुबंध या कानूनी व्यवस्था नहीं, बल्कि संस्कार है। विवाह को परिवारों का मिलन माना जाता है, न कि केवल दो व्यक्तियों का। यही कारण है कि भारत में अधिकांश विवाह आज भी परिवार और समाज की सहमति से ही तय होते हैं। माता–पिता अपने बच्चों के विवाह में केवल निर्णयकर्ता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक होते हैं। उनका अनुभव, सामाजिक पहचान और रिश्तों की समझ विवाह संस्था को स्थिर बनाए रखने में सहायक होती है। परंपरा का यह स्वरूप परिवार की इज़्ज़त–आबरू, सामाजिक प्रतिष्ठा और रिश्तों की निरंतरता से गहराई से जुड़ा हुआ है। विधानसभा में उठाया गया यह मुद्दा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आधुनिक समय में तेजी से बदलती जीवनशैली और युवाओं की बढ़ती स्वतंत्रता ने विवाह संस्था की परिभाषा को बदलना शुरू कर दिया है। कई युवा प्रेम विवाह को प्राथमिकता दे रहे हैं। परिवार की सहमति के बिना विवाह करने के मामलों में वृद्धि हो रही है। कई बार ये विवाह सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और पारिवारिक दबाव के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में सामने आते हैं। लेकिन इन सबके बीच सवाल यह भी उठता है कि यदि हर विवाह केवल व्यक्तिगत निर्णय बन जाए और अभिभावकों की सहमति को दरकिनार कर दिया जाए, तो समाज में नैतिकता, संस्कृति और रिश्तों की गरिमा पर गहरा संकट खड़ा हो सकता है। अभिभावकों की सहमति के पक्ष में सबसे बड़ा तर्क यह है कि यह परिवार की इज़्ज़त और सामाजिक आबरू को बनाए रखती है। माता–पिता का अनुभव बच्चों के लिए मार्गदर्शक होता है। जीवन की कठिनाइयों, रिश्तों की बारीकियों और सामाजिक जिम्मेदारियों की समझ उनसे बेहतर किसी को नहीं हो सकती। विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि परिवारों और संस्कृतियों का मिलन होता है, इसलिए अभिभावकों की सहमति से विवाह में स्थिरता और दीर्घकालिक सफलता की संभावना अधिक होती है। जब परिवार पीछे खड़ा होता है तो विवाह का भावनात्मक संतुलन भी मजबूत रहता है। दूसरी ओर विपक्ष में यह तर्क भी उतना ही प्रबल है कि भारतीय संविधान हर वयस्क नागरिक को यह अधिकार देता है कि वह अपनी पसंद का जीवनसाथी चुन सके। किसी भी प्रकार से अभिभावक की सहमति को बाध्यकारी बनाना व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों का उल्लंघन होगा। कई बार अभिभावक जाति, धर्म, वर्ग या आर्थिक स्थिति को प्राथमिकता देकर बच्चों की पसंद को नकार देते हैं। ऐसे में यदि उनकी सहमति अनिवार्य कर दी जाए तो यह समानता और स्वतंत्रता के सिद्धांतों के खिलाफ होगा। अनचाहे विवाह का खतरा भी इसी से पैदा होता है, जहाँ बच्चों पर दबाव डालकर उनकी पसंद के विरुद्ध विवाह कराए जाते हैं। इससे न केवल विवाह असफल होते हैं बल्कि समाज में असंतोष और तनाव भी बढ़ता है। युवाओं की स्वतंत्रता और समाज की प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें अपनी पसंद के निर्णय लेने का अवसर मिले। समाज तभी प्रगतिशील बन सकता है जब जातिगत और परंपरागत बंधनों को तोड़कर समानता और आधुनिकता को अपनाया जाए। यह भी सच है कि हर अभिभावक आवश्यक नहीं कि समझदार और प्रगतिशील हो। कई बार उनकी सोच परंपराओं और रूढ़ियों से बंधी होती है, जो बच्चों की स्वतंत्रता और खुशी के आड़े आ सकती है। यह स्पष्ट है कि दोनों पक्षों में ठोस तर्क हैं। अभिभावकों की सहमति पूरी तरह नज़रअंदाज़ नहीं की जा सकती, क्योंकि यह परिवार और समाज के लिए आवश्यक है। वहीं युवाओं की स्वतंत्रता भी कमतर नहीं आँकी जा सकती, क्योंकि यह उनका संवैधानिक अधिकार है। अतः समाधान इस टकराव में नहीं, बल्कि संतुलन और संवाद में है। अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों की भावनाओं, पसंद और स्वतंत्रता को समझें। युवाओं को चाहिए कि वे अपने निर्णय में परिवार की प्रतिष्ठा और अनुभव को महत्व दें। सरकार और समाज की भूमिका यह होनी चाहिए कि वे संवाद और परामर्श को बढ़ावा दें, न कि केवल कानून बनाकर किसी एक पक्ष को बाध्य करें। यदि सरकार इस विषय पर कदम उठाना चाहती है, तो सीधे कानून बनाने की बजाय कुछ सुधारात्मक कदम उठाए जा सकते हैं। विवाह के विवादित मामलों में परिवार और युवाओं के बीच संवाद स्थापित करने के लिए परामर्श केंद्र बनाए जा सकते हैं। जल्दबाजी और भावनात्मक निर्णयों को संतुलित करने के लिए मनोवैज्ञानिक और सामाजिक काउंसलिंग की व्यवस्था हो सकती है। अभिभावकों को समझाने के लिए संवेदनशीलता अभियान चलाए जा सकते हैं कि बच्चों की पसंद को नकारना समाधान नहीं है। वहीं युवाओं के लिए जागरूकता कार्यक्रम जरूरी हैं ताकि वे विवाह को केवल भावनात्मक निर्णय नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में समझें। दादा गौतम द्वारा उठाई गई चिंता समाज के लिए एक आवश्यक चेतावनी है। अगर विवाह संस्था से परिवार और अभिभावकों की भूमिका पूरी तरह हटा दी गई, तो समाज में नैतिकता और संस्कार कमजोर होंगे। वहीं अगर अभिभावकों की सहमति को कानूनी रूप से बाध्यकारी बना दिया गया, तो युवाओं की स्वतंत्रता पर चोट पहुँचेगी। इसलिए समाधान केवल यही है कि विवाह संस्था को संवाद, सहमति और समझदारी पर आधारित बनाया जाए। अभिभावकों और बच्चों के बीच पारस्परिक सम्मान ही वह पुल है, जो परंपरा और आधुनिकता, अधिकार और जिम्मेदारी, स्वतंत्रता और संस्कार के बीच संतुलन स्थापित कर सकता है। यदि हम इस संतुलन को साध सके, तभी विवाह संस्था अपनी वास्तविक गरिमा और पवित्रता बनाए रख सकेगी और आने वाली पीढ़ियाँ एक सशक्त, संस्कारित और स्वतंत्र समाज का निर्माण कर सकेंगी।

शूलिनी शोधकर्ता ने प्रमाणित किए हिमालयी पौधों के औषधीय गुण-अस्थमा, बुखार, पीलिया व संक्रमण में उपयोगी

बीएनई

देहरादून। हिमालयी औषधीय पौधे, जिन्हें पीढ़ियों से आदिवासी समुदाय पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग करते आए हैं, अब वैज्ञानिक रूप से उनके स्वास्थ्य लाभों के लिए प्रमाणित किए जा रहे हैं। इन पौधों के औषधीय महत्व को अस्थमा, बुखार, पीलिया, शारीरिक दर्द, श्वसन संबंधी समस्याओं और संक्रमण जैसी स्थितियों के प्रबंधन में कारगर पाया गया है। शूलिनी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल एंड एनवायरनमेंटल साइंसेज की सहायक प्रोफेसर एवं हर्बेरियम व ड्रग म्यूज़ियम की प्रभारी डॉ. राधा के व्यापक शोध से पता चला है कि इनमें से कई पौधे एंटीऑक्सीडेंट, एंटीमाइक्रोबियल, एंटी– इंफ्लेमेटरी, एंटी– डायबिटिक, एंटी– कैंसर और यकृत संरक्षण (हेपाटोप्रोटेक्टिव) गुणों से भरपूर हैं। वर्ष 2025 में उन्होंने चार पेटेंट दर्ज कराए हैं, जो पारंपरिक ज्ञान को फंक्शनल फूड्स और प्राकृतिक एंटीमाइक्रोबियल उत्पादों में बदलने की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम है। अध्ययन किए गए पौधों में सेमलके फूल विशेष रूप से आशाजनक पाए गए हैं। पारंपरिक रूप से इनके शीतल और पुनर्स्थापनात्मक गुणों को महत्व दिया जाता रहा है। वैज्ञानिक परीक्षणों में यह फूल आहार फाइबर, फिनॉल्स और फ्लेवोनॉयड्स से भरपूर पाया गया है, जो एंटीऑक्सीडेंट और एंटी–इंफ्लेमेटरी गतिविधियों में सहायक हैं तथा पोषण की कमी को दूर करने में मददगार हैं। इसी आधार पर डॉ. राधा ने सेमल के फूल और सेब से बना पोषक तत्वों से युक्त जैम तथा एक रेडी–टू–सर्व ड्रिंक तैयार की है, जिसमें सभी सक्रिय यौगिक (बायोएक्टिव कम्पाउंड्स) सुरक्षित रहते हैं। इन दोनों उत्पादों में कृत्रिम संरक्षक या रंग का प्रयोग नहीं किया गया है। वैज्ञानिक समीक्षाओं ने इस फूल में एंटी–डायबिटिक, एंटी–कैंसर, एंटीमाइक्रोबियल और यकृत–संरक्षण की क्षमता को भी रेखांकित किया है। प्रयोगशाला अध्ययनों में दो अन्य हिमालयी पौधों ने भी मजबूत एंटीमाइक्रोबियल गतिविधि दिखाई। प्रिंसेपिया यूटिलिस (हिमालयी चेरी), जिसका भारतीय और चीनी पारंपरिक चिकित्सा में लंबे समय से उपयोग होता रहा है, फिनोलिक एसिड, फ्लेवोनॉयड्स और ट्राइटरपेनॉयड्स से भरपूर पाया गया। परीक्षणों में इस पौधे के अर्क ने क्लेब्सिएला न्यूमोनिया और स्ट्रेप्टोकोकस पायोजीनस जैसे जीवाणुओं को, जिनमें प्रतिरोधी स्ट्रेन भी शामिल थे, रोकने की क्षमता दिखाई। यह इस पौधे की एंटीमाइक्रोबियल क्षमता का पहला वैज्ञानिक प्रमाण है। इसी प्रकार, गिलोय, जिसका आयुर्वेद में प्रतिरक्षा बढ़ाने के लिए व्यापक उपयोग होता है, को पर्यावरण–अनुकूल अल्ट्रासोनिक पद्धति से प्रसंस्कृत किया गया, जिसमें 13 सक्रिय एंटीमाइक्रोबियल यौगिक सुरक्षित रहे। इन खोजों से आगे बढ़ते हुए, डॉ. राधा के एथ्नोबॉटनिकल सर्वेक्षण में 1,600 से अधिक हिमालयी पौधों का दस्तावेजीकरण किया गया है, जिनमें से कई का फाइटोकेमिकल और औषधीय विश्लेषण किया गया। जिसमें प्रवासी गद्दी–बकरवाल चरवाहों द्वारा पशुधन रोगों के उपचार हेतु प्रयुक्त 181 पौधों का विवरण दर्ज किया गया। हालांकि, जड़ों और छाल की अस्थिर कटाई से कई स्थानिक और संकटग्रस्त हिमालयी पौधोंकृ जैसे कुटकी (Picrorhiza kurroa),

भारतीय जेंटियन (Gentiana kurroo), श्वेत हिमालयी कुमुदनी (Lilium polyphyllum) और हिमालयी जंगली जौ (Elymus himalayanus), के अस्तित्व पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। इस कारण पारंपरिक ज्ञान का वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण और संरक्षण अब पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यह शोध कार्य एडवांस्ड नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (ANRF) के सहयोग से किया गया है तथा बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया (देहरादून), डॉ. वाई. एस. परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री (नौनी), शूलिनी विश्वविद्यालय का स्कूल ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज और अंतरराष्ट्रीय सहयोगी विश्वविद्यालयों स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, ईस्ट कैरोलिना यूनिवर्सिटी, क्लेमसन यूनिवर्सिटी, टेक्सास टेक यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी ऑफ वीगो (स्पेन)–के साथ मिलकर संचालित है। हिमालयी पौधों के औषधीय गुणों को रेखांकित कर और उन्हें पेटेंट दाखिलियों से प्रमाणित करके डॉ. राधा का कार्य यह दर्शाता है कि किस प्रकार पारंपरिक औषधियाँ आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए प्रमाण–आधारित नवाचारों को जन्म दे सकती हैं, साथ ही जैव–विविधता संरक्षण की तात्कालिक आवश्यकता पर भी बल देती हैं।

मैदान की नायिकाएँ : ओलंपिक में भारतीय महिला खिलाड़ियों का उदय

डॉ शिवानी कटारा

भारतीय खेल इतिहास लंबे समय तक पुरुष प्रधान रहा, लेकिन बीते कुछ दशकों में महिलाओं ने जिस तरह से अपनी पहचान बनाई है, वह अभूतपूर्व है। कभी खेलों में महिलाओं की भागीदारी सीमित और हाशिए पर थी, परंतु आज भारतीय बेटियाँ अंतर्राष्ट्रीय मंच पर देश का परचम लहरा रही हैं। भारतीय महिला खिलाड़ियों का ओलंपिक प्रतिनिधित्व निरंतर बढ़ता गया है। 2000 में नगण्य उपस्थिति से शुरू होकर यह आँकड़ा आज 40–44% तक पहुँच चुका है। यह बदलाव केवल खेलों का नहीं, बल्कि समाज में महिला सशक्तिकरण और बदलती सोच का भी प्रतीक है। कहा जाता है –"भर्तृभक्त्या स्त्रियः श्रेयो लभन्ते लोकसम्मतम्।" अर्थात् स्त्रियाँ अपनी निष्ठा और कर्म से लोक में श्रेष्ठ यश प्राप्त करती हैं। 1952 के हेलसिंकी ओलंपिक में मैरी डिसूजा ने भारत का प्रतिनिधित्व कर इतिहास रचा। वे पहली भारतीय महिला एथलीट थीं जिन्होंने ओलंपिक मंच पर कदम रखा। उस समय न पर्याप्त प्रशिक्षण सुविधाएँ थीं, न ही समाज से उन्हें व्यापक स्वीकृति मिलती थी। धीरे–धीरे समय बदला और 1980 के दशक में पी.टी. ऊषा भारतीय खेलों का बड़ा नाम बनीं। "ट्रैक क्वीन" कही जाने वाली ऊषा ने 1984 लॉस एंजेलिस ओलंपिक में 400 मीटर हर्डल्स में चौथा स्थान पाकर इतिहास रचा। पदक से कुछ सेकंड दूर रह जाने पर भी उन्होंने दिखाया कि भारतीय महिलाएँ ट्रैक पर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं। उनकी उपलब्धि ने असंख्य बेटियों को खेलों की ओर प्रेरित किया। इसके बाद खेलों में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ती गई। 2000 के दशक में कर्णम मल्लेश्वरी ने सिडनी ओलंपिक में वेटलिफ्टिंग का कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा। वे भारत की पहली महिला बनीं जिन्होंने ओलंपिक में पदक हासिल किया। इस उपलब्धि ने महिलाओं की खेल यात्रा में नया साहस और आत्मविश्वास भर दिया। 2010 के बाद भारतीय महिला खिलाड़ियों का स्वर्णिम दौर शुरू हुआ। 2012 लंदन ओलंपिक में साइना नेहवाल ने बैडमिंटन में कांस्य जीतकर खेल को घर–घर पहुँचाया। उसी वर्ष मणिपुर की मैरी कॉम ने मुक्केबाजी में कांस्य पदक जीतकर साबित किया कि साधारण पृष्ठभूमि, माँ और पत्नी होने की जिम्मेदारियों के बावजूद विश्वस्तरीय खिलाड़ी बन सकती हैं। उनका संघर्ष प्रेरणादायक कथा हैकृ साधारण परिवार से निकलकर पाँच बार की विश्व चौंपियन बनीं और राज्यसभा सांसद के रूप में भी सभी को प्रेरणा देती रहीं। 2016 रियो ओलंपिक में भारतीय महिलाओं ने देश की उम्मीदों को संभाला। पी.वी. सिंधु ने बैडमिंटन में रजत पदक जीता और साक्षी मलिक ने कुश्ती में कांस्य पदक। दीपा कर्माकर ने जिम्नास्टिक में "प्रोडुनोवा" जैसे कठिन वॉल्ट को सफलतापूर्वक कर देश को रोमांचित किया। यहीं से यह धारणा और गहरी हो गई कि महिलाएँ अब हर खेल में समान रूप से आगे बढ़ सकती हैं। 2020 टोक्यो ओलंपिक (2021) में भारतीय महिला खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। मीराबाई चानू ने वेटलिफ्टिंग में रजत पदक जीता, लवलीना बोरगोहेन ने मुक्केबाजी में कांस्य पदक हासिल किया और पी.वी. सिंधु ने लगातार दूसरी बार पदक जीतकर इतिहास रचा। इन उपलब्धियों का प्रभाव पदकों से कहीं आगे बढ़ा। अब ग्रामीण क्षेत्रों की बेटियाँ, जहाँ खेलना कभी असंभव माना जाता था, मैरी कॉम, साक्षी मलिक और मीराबाई चानू को देखकर आगे बढ़ रही हैं। हरियाणा जैसे राज्यों के छोटे गाँवों से निकलकर बेटियाँ अंतर्राष्ट्रीय मंच तक पहुँच रही हैं, वहीं कभी बेटियों के जन्म पर खुशी तक नहीं मनाई जाती थी। भारतीय महिलाओं का खेल सफर सशक्तिकरण की जीवंत गाथा है। बदलते समाज में परिवार बेटियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। स्कूल–कॉलेजों में सुविधाएँ बढ़ी हैं और सरकार "खेलो इंडिया" जैसे कार्यक्रमों से महिला खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर रही है। इस यात्रा से यह सिद्ध होता है कि वास्तविक बदलाव सिर्फ पदकों से नहीं, बल्कि उन संघर्षों से उपजता है जिन्हें खिलाड़ी अपने पीछे प्रेरक उदाहरण के रूप में समाज के लिए छोड़ जाती हैं। पी.टी. ऊषा की दौड़, कर्णम मल्लेश्वरी का ऐतिहासिक पदक, मैरी कॉम की जुझारू लड़ाई, सिंधु का आत्मविश्वास और मीराबाई का साहसकृये सब मिलकर भारतीय महिलाओं की बदलती स्थिति की कथा कहते हैं। जैसा कि मैरी कॉम ने कहा हैकृ"कभी हार मत मानो, क्योंकि जब तुम हार मानते हो, तभी तुम्हारी असली हार होती है।" आज भारतीय महिला खिलाड़ी केवल पदक नहीं जीत रहीं, बल्कि रूढ़ियाँ तोड़कर बेटियों को प्रेरित कर रही हैं और यह संदेश दे रही हैं कि खेल जीवन की सबसे बड़ी शिक्षा है–संघर्ष, अनुशासन और आत्मविश्वास। आने वाले समय में जब इतिहास लिखा जाएगा तो यह कहा जाएगा कि इक्कीसवीं सदी में भारतीय महिलाओं ने खेलों के दिशा और स्वरूप को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया।

बिहार में हर घर से उठेगी महिला उद्यमी! नीतीश सरकार ने लॉन्च की ऐतिहासिक योजना

बिहार के हर घर में एक महिला उद्यमी तैयार होगी! जी हां, ये कोई गप नहीं है। आज इसकी रूप रेखा और सीएम नीतीश कुमार के इस विजन का ऐलान कर दिया गया है। जो बिहार की अर्थव्यवस्था को नई ताकत तो देगा ही बल्कि बिहार से पलायन की मजबूरी भी खत्म कर देगा। आज कैबिनेट की बैठक में इस नीति को अमली जामा पहना दिया गया है। हर घर से उद्यमी महिला आएंगी शुक्रवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में 'मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना' को मंजूरी दे दी गई है। इस योजना के तहत हर घर से एक महिला को उद्यमी बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस कदम को बिहार की महिलाओं के लिए अहम माना जा रहा है। माना जा रहा है अब कदम से न केवल पलायन रुकेगा बल्कि हर घर से उद्यमी महिलाएं निकलती नजर आएंगे।

10000 रुपये की पहली किस्ध्त मुफ्त! इस योजना की शुरुआत इसी सितंबर 2025 से हो जाएगी। इसके तहत महिलाओं को 10 हजार रुपये की पहली किस्त सीधे बैंक खाते में दी जाएगी। यह अनुदान के रूप में होगा। जिसे रोजगार करने वाली महिलाओं को लौटाने की भी आवश्ध्यकता नहीं होगी। रोजगार शुरू करने के छह माह बाद उनके काम का आकलन किया जाएगा। यदि वो एक सफल उद्यमी के बनने में सफल हुईं तो ऐसी महिलाओं को 2 लाख रुपये तक की अतिरिक्त राशि भी दी जा सकेगी। ग्रामीण विकास विभाग को सौंपी गई जिम्ध्मेदारी इस योजना के सफल संचालन के लिए ग्रामीण विकास विभाग को जिम्मेदारी दी गई है। साथ ही महिलाओं के उत्पादों की बिक्री के लिए गांव से लेकर शहर तक हाट–बाजार विकसित करने का भी निर्णय लिया गया है। जिसका फायदा उद्यमी महिलाओं को सीधे तौर पर मिलेगा। महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्ध्वपूर्ण कदमरू सीएम नीतीश मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि यह योजना बिहार में महिला सशक्तिकरण की दिशा महत्ध्वपूर्ण होने वाला है। यह योजना अब तक का सबसे बड़ा कदम होगा। सीएम नीतीश कुमार का मानना है कि "हर घर से एक महिला उद्यमी तैयार होगी तो बिहार की अर्थव्यवस्था को नई ताकत मिलेगी और पलायन की मजबूरी भी कम होगी।"

आगामी 6 एवं 7 सितंबर को आयोजित प्रारंभिक अर्हता परीक्षा के संबंध में बैठक

बसों की पर्याप्त संख्या में उपलब्धता सुनिश्चित हो परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में अभ्यर्थियों को असुविधा न हो बस अड्डों एवं बसों की साफ सफाई बेहतर हो-

एस एन साबत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के अध्यक्ष एस एन साबत की अध्यक्षता में आज पिकप भवन गोमतीनगर लखनऊ में परिवहन निगम के अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक संपन्न हुई। उक्त बैठक में आगामी 6 एवं 07 सितंबर 2025 को आयोजित होने वाली प्रारंभिक अर्हता परीक्षा(पी ई टी) को सुचारू ढंग से संपन्न कराने के संबंध में वार्ता हुई। बैठक में साबत ने कहा कि इस वर्ष लगभग 25 लाख अभ्यर्थी प्रारंभिक अर्हता परीक्षा 2025 में सम्मिलित हो रहे हैं। इतनी बड़ी संख्या में परीक्षार्थियों की आवागमन की सुचारू व्यवस्था के लिए परिवहन निगम की जिम्मेदारी एवं भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि बसों की पर्याप्त संख्या सुनिश्चित कर लिया जाए ,जिससे कि समय से अभ्यर्थियों को उनके सेंटर पर पहुंचने में असुविधा न हो। एस एन साबत ने परिवहन निगम के अधिकारियों से कहा कि बस स्टैंड पर किसी भी प्रकार की अव्यवस्था ना हो, इसका पूरा ध्यान रखा जाए। अभ्यर्थियों के लिए बस स्टैंड पर पीने के पानी, बैठने इत्यादि की व्यवस्था उचित ढंग से की जाए। बस स्टेशन पर एवं बसों में साफ सफाई बेहतर रहे। सूचना उपलब्ध कराने के लिए कंट्रोल रूम की भी व्यवस्था की जाए। अनाउंसमेंट सिस्टम की व्यवस्था बेहतर हो। साबत ने कहा कि परीक्षा को सुचिता एवं पारदर्शी ढंग से कराए जाने के निर्देश है। उन्होंने कहा कि आवागमन का सबसे अधिक दबाव रहता है। परीक्षार्थियों की संख्या को देखते हुए समय से बसों के संचालन से संबंधित सभी तैयारियां कर ली जाए। 05 सितंबर से ही परीक्षार्थियों का आवागमन शुरू हो जाएगा। इसके दृष्टिगत अभी से अपनी तैयारी पर परिवहन निगम कार्य कर ले। बैठक में अपर पुलिस महानिदेशक रे लवे प्रकाश, सचिव अवनीश सक्सेना, अपर प्रबंध निदेशक परिवहन निगम रामसिंह वर्मा, प्रधान प्रबंधक कार्मिक अंकुर विकास, सहायक प्रबंधक कार्मिक मनोज कुमार शर्मा उपस्थित रहे।

बेहतर रोगी देखभाल के लिए उन्नत बोन हेल्थ मशीन का उद्घाटन

लखनऊ ब्यूरो

लखनऊ। एसजीपीजीआईएमएस के एडवांस डायबिटिक सेंटर में हड्डियों की मजबूती और समग्र अस्थि स्वास्थ्य की जांच के लिए एक नई मशीन स्थापित की गई है। संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर आर के धीमन ने आज एडवांस डायबिटीज सेंटर (एडीसी) भवन की चौथी मंजिल पर स्थापित डुअल–एनर्जी एक्स–रे एब्जॉर्पियोमेट्री (डीएक्सए) मशीन (मॉडल होराइजन) का उद्घाटन किया। इस सुविधा का उद्घाटन करते हुए निदेशक महोदय ने कहा कि इससे ऑस्टियोपोरोसिस (कमजोर हड्डियाँ) और हड्डियों से संबंधित अन्य समस्याओं का शीघ्र निदान करने में मदद मिलेगी, ताकि समय पर उपचार शुरू हो सके। उन्होंने कहा, इस उन्नत निदान उपकरण का उपयोग रोगी देखभाल और अनुसंधान, दोनों के लिए किया जाएगा, जिसमें ऑस्टियोपोरोसिस और अन्य मेटाबॉलिक अस्थि रोगों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। ऑस्टियोपोरोसिस एक सामान्य स्थिति है, जिसमें हड्डियाँ कमज़ोर हो जाती हैं और अक्सर बिना किसी चेतावनी के आसानी से टूट जाती हैं। भारत में ऑस्टियोपोरोसिस की व्यापकता क्षेत्र, आयु वर्ग और अध्ययन की गई जनसंख्या के अनुसार भिन्न होती है। कुल मिलाकर, लगभग 18–20% भारतीय वयस्कों को ऑस्टियोपोरोसिस है, और रजोनिवृत्ति के बाद की एक–तिहाई महिलाएँ इससे प्रभावित होती हैं। नई मशीन हड्डियों की मजबूती, भविष्य में फ्रैक्चर के जोखिम और यहाँ तक कि शरीर में वसा और मांसपेशियों की मात्रा भी माप सकती है। यह न केवल बुजुर्गों के लिए, बल्कि बच्चों, रजोनिवृत्ति के बाद महिलाओं और मधुमेह व हार्मोनल विकारों जैसी लंबे समय से चली आ रही स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे मरीजों के लिए भी उपयोगी है। DEXA मशीन रीढ़ की हड्डी में छिपे हुए फ्रैक्चर का भी पता लगा सकती है, हड्डियों की गुणवत्ता की जाँच कर सकती है और कूल्हे के बारे में विस्तृत रिपोर्ट दे सकती है, जो वृद्ध लोगों में गंभीर फ्रैक्चर का सबसे आम कारण है। ये परीक्षण डॉक्टरों को सटीक उपचार योजनाएँ बनाने, विकलांगता को रोकने और मरीजों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करेंगे। एक DEXA मशीन एक्स–रे की तुलना में बहुत कम विकिरण के साथ हड्डी की ताकत (अस्थि खनिज घनत्व – BMD) को मापने में मदद करती है,। यह सटीक रिपोर्ट देती है और यह बच्चों में ओस्टियोजेनेसिस इम्परफेक्टा जैसी दुर्लभ हड्डी की स्थिति का पता लगाने के लिए भी उपयोगी है। यह SGPGIMS में अपनी तरह की दूसरी DEXA मशीन है। पहली मशीन 1997 में स्थापित की गई थी। हड्डी के स्वास्थ्य की जांच की आवश्यकता वाले रोगियों की बढ़ती संख्या के कारण नई मशीन आवश्यक थी। इस सुविधा के साथ, उत्तर प्रदेश और पड़ोसी राज्यों के लोग अब हड्डी के स्वास्थ्य के लिए सबसे आधुनिक तकनीकों से लाभ प्राप्त कर सकेंगे। यह मशीन एसजीपीजीआई में महत्वपूर्ण शोध कार्यों में भी सहायक होगी जिससे भविष्य में मरीजों को लाभ होगा। उद्घाटन समारोह में मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. देवेंद्र गुप्ता, एंडोक्राइनोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रीति दबडगांव, एंडोक्राइनोलॉजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. सुभाष यादव, अन्य संकाय सदस्य डॉ. अंबिका टंडन, डॉ. विभूति मोहंता, बायो स्टैटिस्टिक्स विभागाध्यक्ष डॉ. उत्तम सिंह और सामग्री प्रबंधन विभाग के संयुक्त निदेशक प्रकाश सिंह उपस्थित थे।

यूपी में होगी होमगार्ड जवानों की नई भर्ती

नियमों में बड़े बदलाव की तैयारी

संवाददाता

लखनऊ। सीएम योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में होमगार्ड जवानों के रिक्त पदों को भरने के लिए तत्काल भर्ती प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए हैं। बदलती परिस्थितियों और बढ़ती जिम्मेदारियों को देखते हुए उन्होंने एनरोलमेंट से जुड़े नियमों में संशोधन पर जोर दिया। सीएम ने कहा,भर्ती प्रक्रिया समयबद्ध पारदर्शी और निष्पक्ष होनी चाहिए। पुलिस भर्ती एवं प्रशिक्षण बोर्ड के सहयोग से एक नया बोर्ड गठित किया जाएगा। प्रदेश में इस समय 1,18,348 स्वीकृत पदों में 71,155 होमगार्ड कार्यरत हैं। अगले दस वर्षों में 38,000 स्वयंसेवक सेवानिवृत्त होंगे। मौजूदा बल में 51 फीसदी से अधिक होमगार्ड 50 वर्ष से ऊपर की उम्र के हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं को अवसर देने और बल को अधिक सक्षम बनाने के लिए

भर्ती के नियमों में बदलाव किया जाए। एनरोलमेंट की अधिकतम आयु 30 वर्ष तय की जाए। चयन प्रक्रिया में लिखित परीक्षा को अनिवार्य किया जाएगा और पात्रता मानक समयानुकूल बनाए जाएंगे। आपदा प्रबंधन का अनुभव या प्रशिक्षण प्राप्त अभ्यर्थियों को प्राथमिकता की बात कही गई। अधिकारियों ने बताया कि होमगार्ड विभाग की प्रक्रियाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाया जा रहा है। ड्यूटी आवंटन, भत्ता भुगतान, अनुग्रह राशि, पेंशन जैसी सेवाएं अब ऑनलाइन हो चुकी हैं। श्होमगार्ड मित्र ऐपश् जैसी पहल से पारदर्शिता और दक्षता बढ़ी है।वर्तमान में एक केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान और 12 मंडलीय प्रशिक्षण केंद्र सक्रिय हैं, जहां हर साल 15,000 से अधिक स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। लोकसभा और विधानसभा चुनावों, राज्यों के निर्वाचन कार्यों और महाकुंभ 2025 में होमगार्ड्स ने उल्लेखनीय योगदान दिया है।सीएम योगी ने विश्वास जताया कि नई भर्ती प्रक्रिया लागू होने के बाद यूपी का होमगार्ड संगठन और अधिक प्रशिक्षित, सक्षम और जनसेवा के प्रति समर्पित स्वरूप में सामने आएगा।

बप्पा के दरबार में गूंजा मंगल मूर्ति मोरिया ...

संवाददाता

लखनऊ। अलीगंज का राजा गणेश पूजा सेवा समिति की ओर से गुलाब वाटिका अपार्टमेंट्स नेहरू बाल वाटिका पार्क के पास, अलीगंज मे चल रहे 13 वां श्री गणेश जन्मोत्सव के तीसरे दिन शुक्रवार को सुबह बप्पा की पूजा अर्चना के बाद शाम को फूलों की सुंदर व विशाल गजरा गजानन को पहनाई गई। इस दौरान समिति के संरक्षक राज कुमार सिंघल, महेश अग्रवाल, संदीप अग्रवाल, मनोज मिश्रा, अध्यक्ष सौरभ अग्रवाल, महामंत्री शरद तिवारी, शुभम अग्रवाल आदि लोग थे। शाम को लखनऊ की भजन गायिका अनुका मिश्रा ने बप्पा के दरबार में भजनों की शुरुआत गणपति बप्पा मोरिया ..., से करने के बाद राम रख ले तेरे भाग्य जाग जाएंगे..., सुनाया।

नवयुग कन्या महाविद्यालय में राष्ट्रीय खेल दिवस पर खिलाड़ियों का सम्मान

संवाददाता

लखनऊ। नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ में राष्ट्रीय खेल दिवस बड़े हर्ष और उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण से हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अवनीश सिंह, सदस्य विधान परिषद, उत्तर प्रदेश एवं अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश क्रीड़ा भारती ने छात्राओं को खेलों में बढ़–चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कृ "खेलोगे कूदोगे तो बनोगे नबाबो के नबाब। सितारे की तरह चमकने के लिए पूरी मेहनत करनी होगी।" उन्होंने यह भी घोषणा की कि महाविद्यालय को कबड्डी मैट प्रदान किया जाएगा, ताकि छात्राएँ इस खेल में और अधिक निखर कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें। विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर रचना श्रीवास्तव, प्राचार्या, ए.पी. सेन मेमोरियल डिग्री कॉलेज, लखनऊ ने कहा कि खेल शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ अनुशासन और आत्मविश्वास भी प्रदान करते हैं। समारोह की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. मंजुला उपाध्याय ने की। उन्होंने कहा कृ "नवयुग की बेटियाँ हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रही हैं। खेलों के माध्यम से

वे आत्मविश्वास, नेतृत्व और अनुशासन की मिसाल बन रही हैं।" वार्षिक खेल रिपोर्ट में बताया गया कि वर्ष 2024–25 उपलब्धियों से भरा रहा। छात्राओं ने ऑल इंडिया, नॉर्थ जोन, स्टेट, जिला और विश्वविद्यालय स्तर की प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। महाविद्यालय में योग एवं मार्शल आर्ट को नियमित गतिविधियों में शामिल कर छात्राओं को स्वास्थ्य, अनुशासन और आत्मरक्षा के प्रति सजग बनाया जा रहा है।कार्यक्रम में छवि पांडेय ने मेजर ध्यानचंद पर प्रेरक कविता प्रस्तुत की तथा छात्राओं ने आकर्षक पिरामिड प्रदर्शन कर सभी को प्रभावित किया। इस अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु निम्न छात्राओं को सम्मानित किया गया। दिव्या भर्तृवाल, खुशी यादव, साक्षी यादव, शिप्रा गौतम, वर्तिका वर्मा, ज्योति राजपूत, रेशमा कुमारी, माया यादव, सौम्या पांडे, सुरभि तिवारी, प्रज्ञा शुक्ला, स्नेहा जायसवाल, पार्वती शर्मा, खुशबू शर्मा, रजनी, अर्पित शर्मा, लक्ष्मी कुमारी, सृष्टि नायक, राशि सोनगरा, खुशी मल्होत्रा, दीप्ति पटेल, अनामिका यादव, ईशा कुमारी शर्मा, आरती वर्मा, परी मिश्रा, गीतांजलि तिवारी। राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के लिए मनोरंजनात्मक खेल प्रतियोगिताएँ जैसे कृ टीई नोट कंपटीशन, लेमन स्पून रेस, सुई–धागा, बल्लू पार्टनर रेस और जलेबी ईटिंग गेम्स आयोजित किए गए जिनमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रो. सीमा पांडेय (शारीरिक शिक्षा विभागाध्यक्ष) ने किया। आयोजन खेलकूद समिति की ओर से दीक्षा, ज्योति वर्मा, महिमा चौधरी और आरती रावत द्वारा किया गया।

छात्रा से छेड़छाड़ में फिजियोल-जिस्ट सस्पेंड

संवाददाता

लखनऊ। राज्य खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी संस्थान एसआईएफपीटी

में एमएससी की छात्रा से फिजियोलॉजिस्ट मनोज कुमार प्रचेता के छेड़छाड़, चौटिंग का मामला सामने आया है। जांच के बाद आरोपी को निलंबित कर दिया गया है।उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग परिसर में एसआईएफपीटी चलता है। एमएससी खाद्य प्रौद्योगिकी की पढ़ाई होती है। संस्थान बुंदेलखंड विवि से संबद्ध है। यहां की छात्रा ने फिजियोलॉजिस्ट कम बायोकेमिस्ट मनोज पर छेड़खानी और मोबाइल फोन पर असमय चौटिंग के आरोप लगाए थे।उद्यान विभाग की उप निदेशक गीता द्विवेदी की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने जांच की। इसके बाद अपर मुख्य सचिव बीएल मीना ने आरोपी को निलंबित कर मुख्यालय से संबद्ध कर दिया है। रेशम विभाग के संयुक्त सचिव भूपेंद्र सिंह को जांच अधिकारी नामित किया गया है।यह सब संस्थान में आए दिन विवाद होता रहा है। कभी छात्रवृत्ति को लेकर विवाद होता है तो कभी हाजिरी को लेकर। आरोप है कि पढ़ाई के नाम पर सिर्फ खानापूरी हो रही है। आलम यह है कि कुछ छात्रों को बिना हाजिरी के ही पास कर दिया जाता है।

आगरा में तैनात एसडीएम की सड़क दुर्घटना में मौत, लखनऊ से जा रहे थे वापस

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ–आगरा एक्सप्रेस वे पर आज शुक्रवार सुबह दर्दनाक हादसे में आगरा में तैनात अपर नगर मजिस्ट्रेट राजेश कुमार जायसवाल की मौत हो गई। चालक गंभीर रूप से घायल है,जिसे उपचार के लिए सैफई अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अपर नगर मजिस्ट्रेट आगरा राजेश कुमार अपनी क्रेटा कार से लखनऊ से आगरा की तरफ जा रहे थे। उनकी कार जैसे ही आगरा–लखनऊ एक्सप्रेस–वे के 77– किमी पर पहुंची तभी ये हादसा हो गया। कार किसी अज्ञात वाहन से टकरा गई।

राहुल गांधी की चांदी की चम्मच पर भारी पड़ रही चाय की चम्मच

पीएम मोदी पर अभद्र टिप्पणी को लेकर केशव मौर्य ने गांधी परिवार पर साधा निशाना

संवाददाता

लखनऊ। बिहार में कुछ अज्ञात लोगों द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ कथित अभद्र टिप्पणी किए जाने के एक दिन बाद शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने गांधी परिवार पर निशाना साधते हुए कहा उनकी चांदी की चम्मच पर (मोदी की) चाय की चम्मच भारी पड़ रही है। उपमुख्यमंत्री मौर्य ने 'एक्स पर पोस्ट कर कहा, ''यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी छोटी लाइन को मिटाने के बजाय उससे बड़ी लाइन खींचने में यकीन रखते हैं। यही बात सोनिया गांधी, प्रियंका वाद्रा और राहुल गांधी को अखरती है। उन्होंने कहा ''इसलिए नफरत, घृणा व अंहकार से लबालब यह तिकड़ी मोदी जी को कभी मौत का सौदागर, नीच या वोट चोर कहकर उनकी खिल्ली उड़ाती है। दरअसल, ऐसा कहकर वह जनता का मजाक उड़ाती है। पिछड़े वर्ग से आने वाले राज्य के

प्रमुख नेता एवं भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मौर्य ने कहा, ''गांधी परिवार को कतई इल्म नहीं कि देश के सबसे बड़े पिछड़े वर्ग से ताल्लुक रखने वाले मोदी जी का पसीना देखकर ही जनता ने उनको तीन बार इस देश का प्रधानमंत्री चुना है।'' उन्होंने कहा, ''वह राहुल जी की तरह चांदी का चम्मच लेकर तो पैदा नहीं हुए थे लेकिन उनकी चांदी की चम्मच पर चाय की चम्मच भारी पड़ रही है। इसलिए इस तिकड़ी ने अपने साथ–साथ अब अपनी निहायत ही हल्की मंडलियों को भी मोदी जी को गाली देने का ठेका दे रखा है।''

संक्षिप्त

लापरवाह चार संविदा डॉक्टरों की सेवा समाप्त

संवाददाता

लखनऊ। पीएचसी व आयुष्मान आरोग्य मंदिर में संविदा पर तैनात चारों डॉक्टरों व एक डाटा एंट्री ऑपरेटर की सेवा समाप्त कर दी गई। ये सभी केंद्रों से गैरहाजिर रहते हैं और काम में भी लापरवाही बरतते थे। कई नोटिस के बाद भी कार्यशैली में सुधार नहीं हुआ। जिला स्वास्थ्य समिति ने इन्हें हटाने के फैसले पर मुहर लगा दी।सीएमओ के अधीन 108 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर और 54 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चल रहे हैं। यहां वॉक इन इंटरव्यू से संविदा पर चयनित डॉक्टरों को तैनात किया गया है। आरोप है कि जिन चार डॉक्टरों पर कार्रवाई की गई, उनमें से दो आए दिन बिना सूचना के केंद्र से गायब रहते थे। दो अन्य डॉक्टरों व डाटा एंट्री ऑपरेटर पर काम सही से न करने का आरोप था।अफसरों के मुताबिक आरोपी डॉक्टर अर्बन पीएचसी निलमथा, अर्बन आयुष्मान आरोग्य मंदिर कल्लन खेड़ा, अर्बन आयुष्मान आरोग्य मंदिर चौपटिया, आयुष्मान आरोग्य मंदिर कटरा विजनवेग पर तैनात था।

सफेद बारादरी में नवरात्री स्पेशल पार्टी वियर परिधानों की प्रदर्शनी का शुभारंभ हुआ

संवाददाता

लखनऊ। नवरात्री स्पेशल कलेक्शन के साथ कॉटन एंड सिल्क फैब ने कैसरबाग सफेद बारादरी में नवरात्री स्पेशल पार्टी वियर परिधानों की प्रदर्शनी का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि लखनऊ व्यापार मंडल के अध्यक्ष, रेडक्रास सोसाइटी के मेंबर एवं गैलेंट्री अवॉर्ड से पुरस्कृत अमरनाथ मिश्रा ने फीता काटकर दस दिवसीय कॉटन एंड सिल्क फैब प्रदर्शनी 2025 का शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रदर्शनी आयोजक मानस आचार्य, जावेद मकसूद ने मुख्य अतिथि का पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। 29 अगस्त से 7 सितंबर तक आयोजित की गई है।

आयुष निदेशक करेंगी होम्योपैथी निदेशालय में मृतक आश्रित नियुक्ति की जांच

विधायक शहजिल इस्लाम अंसारी ने उठाया था सवाल

संवाददाता

लखनऊ। होम्योपैथी विभाग में मृतक आश्रितों की भर्ती की फिर से जांचहोगी। आयुष मिशन की निदेशक निशा अनंत को जांच की जिम्मेदारी दी गई है। मृतक आश्रितों की भर्ती को लेकर विधायक शहजिल इस्लाम अंसारी ने सितंबर 2023 में सवाल उठाया था। होम्योपैथी निदेशालय के अधिकारियों पर आरोप है कि 2022 में छह मृतक आश्रित की गलत नियुक्तियां की थी। आश्वासन समिति ने होम्योपैथी विभाग से इस संबंध में जवाब मांगा लेकिन संतुष्ट न होने पर इस मामले की जांच सीडीओ लखनऊ से कराने के निर्देश दिए गए थे। तत्कालीन सीडीओ लखनऊ ने इस मामले की जांच की। उन्होंने पाया कि होम्योपैथी निदेशालय में छह मृतक आश्रितों की नियुक्ति में लगाए दस्तावेज संदिग्ध थे। सीडीओ की रिपोर्ट में सामने आया था कि कर्मचारी बिसन लाल की मौत होने के 30 साल बाद उनकी बेटी को मृतक आश्रित कोटे के तहत नौकरी दी गई, जबकि इसके लिए पदों के सृजन में भी गड़बड़ी की गई थी। लेकिन सीडीओ की जांच रिपोर्ट के बाद कोई कार्रवाई नहीं हुई। 26 अगस्त को आश्वासन समिति की बैठक में फिर से पूरे मामले की

जांच आयुष मिशन की निदेशक से कराने के निर्देश दिए गए हैं। आयुष मिशन की निदेशक निशा अनंत का कहना है कि अभी उन्हें इससे संबंधित कोई पत्र नहीं मिला है।

संभल हिंसा पर सीएम योगी का कड़ा बयान

कहा डेमोग्राफी बदलने की कोशिश करने वालों को खुद होगा पलायन

संवाददाता

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संभल हिंसा मामले की जांच रिपोर्ट के बाद अपने पहले बयान में साफ कर दिया कि उनकी सरकार किसी भी इलाके की जनसंख्या संरचना (डेमोग्राफी) को नहीं बदलने देगी। उन्होंने कहा कि जो भी ऐसा करने की कोशिश करेगा उसे खुद ही पलायन करना पड़ेगा। अब यह बयान यह दर्शाता है कि योगी सरकार इस मामले को लेकर कितनी गंभीर है और प्रदेश में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए कड़ा रुख अपना रही है। सीएम योगी ने प्रतापगढ़ में एक कार्यक्रम दौरान समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पर तीखा हमला किया। उन्होंने कहा कि पूर्व की सरकारें जानबूझकर चुन–चुन कर हिंदुओं को निशाना बनाती थीं। उनके शासनकाल में दंगे कराए जाते थे और इलाके ऐसे बनाए जाते थे जहां हिंदू कम हो जाते थे यानी शहिंदू विहीन इलाका बन जाता था। योगी ने आरोप लगाया कि यह सब डेमोग्राफी को बदलने की एक साजिश थी ताकि हिंदुओं का प्रभाव कम हो सके। बता दें सीएम योगी आदित्यनाथ हाल ही में प्रतापगढ़ पहुंचे, जहां उनका भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। हेलीकॉप्टर से पुलिस लाइन में उतरने के बाद उन्होंने सबसे पहले मावला देवी धाम में पूजा–अर्चना की। उसके बाद

जीआईसी मैदान में एक बड़ी जनसभा को संबोधित किया। इस जनसभा में उन्होंने विपक्ष पर जमकर हमला बोला और अपने कार्यकाल की उपलब्धियों का बखान किया। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब उत्तर प्रदेश में डबल इंजन की सरकार है। यह सरकार किसी भी कीमत पर प्रदेश की जनसांख्यिकी को बदलने नहीं देगी। उन्होंने साफ किया कि अब कोई भी ऐसा करने की कोशिश करेगा तो उसे प्रदेश या जिले से पलायन करना पड़ेगा। इसका मतलब यह है कि योगी सरकार ने इस मुद्दे पर जीरो टॉलरेंस का निर्णय लिया है। सीएम ने यह भी कहा कि अब शासन बिना किसी भेदभाव के चलता है। अब तुष्टिकरण की राजनीति नहीं बल्कि संतुष्टीकरण के जरिए सभी नागरिकों को सशक्त बनाने की नीति पर काम किया जा रहा है। सीएम योगी ने प्रतापगढ़ को करीब 550 करोड़ रुपए की 116 नई परियोजनाओं की घोषणा की। इसके अलावा प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों को मकानों की चाबियां सौंपी गईं। छात्र सम्मान में सीएम ने कई विद्यार्थियों को लैपटॉप भी वितरित किए। यही नहीं योजना के तहत लाभार्थियों को 25–25 हजार रुपए के ऋण चेक भी दिए गए, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हो सकेगा। यह सब योगी सरकार की जनता को सीधे लाभ पहुंचाने की नीति को दर्शाता है। सीएम योगी का यह बयान और उनके द्वारा लिए गए कदम कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने और सामाजिक सद्भाव कायम करने की कोशिशों का हिस्सा हैं। संभल हिंसा जैसी घटनाओं को दोबारा न होने देने के लिए सरकार पूरी तरह सजग है। उन्होंने यह भी जोर दिया कि उत्तर प्रदेश में सभी नागरिकों को बराबर का अधिकार मिलेगा और किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाएगा। यह सरकार सभी वर्गों को साथ लेकर आगे बढ़ रही है।

संक्षिप्त

एक समान कारोबार में एनबीएफसी की सहायक कंपनियां नहीं कर सकेंगी व्यापार, योजना लाने पर काम कर रहा आरबीआई

एजेंसी

मुंबई। गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) की सहायक इकाइयां अब समान कारोबार में शामिल नहीं हो पाएंगी। आरबीआई जल्द ही इस तरह की योजना लाने पर काम कर रहा है। बैंकों के लिए यह नियम पहले से ही लागू हैं। अब एक ही कारोबार में दो कंपनियों के शामिल होने के टकराव को रोकने के लिए एनबीएफसी को भी इस दायरे में लाया जाएगा। सूत्रों ने बताया, आरबीआई कुछ एनबीएफसी के साथ इस प्रस्ताव पर चर्चा कर रहा है। दिशानिर्देश जल्द जारी होने की उम्मीद है। केंद्रीय बैंक इस क्षेत्र में संभावित उथल–पुथल के प्रति सतर्क रहा है। उसने एनबीएफसी को चेतावनी दी है कि वह बेतहाशा कर्ज बांटने वाली कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई करने में संकोच नहीं करेगा। आरबीआई को चिंता है कि ज्यादा ग्राहक लाने के लिए नकली कारोबार जैसी प्रथा जटिल ऋण संरचना को जन्म दे सकती है। इससे जोखिम बढ़ सकते हैं। एनबीएफसी के आक्रामक कर्ज देने से बढ़ी चिंता सूत्रों ने बताया, आरबीआई का नया निर्देश मुख्य रूप से बड़ी गोल्ड फाइनेंस कंपनियों को प्रभावित कर सकता है। इनकी सूक्ष्म वित्त शाखाएं गोल्ड लोन देती हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस उद्योग ने जमकर कर्ज बांटे हैं। इस आक्रामक विस्तार के कारण नियामक ने कड़ी कार्रवाई भी की है। इसके बाद ही एचडीएफसी और एक्सिस जैसे कई बैंकों को अपनी उपभोक्ता ऋण सहायक कंपनियों को खरीदने के लिए साझेदारों की तलाश करनी पड़ी है।

भारत सेमीकंडक्टर मिशन के तहत टैलेंट तैयार करने पर दे रहा जोर, 7600 करोड़ की यूनिट का उद्घाटन

एजेंसी

केंद्रीय सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत को जल्द ही अपना पहला सेमीकंडक्टर चिप मिल जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत के पहले सेमीकंडक्टर चिप को देश को समर्पित करेंगे। वैष्णव ने गुजरात के साणंद जिले में सीजी सेमी प्राइवेट लिमिटेड की उन्नत आउटसोर्स्ड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट सुविधा का उद्घाटन किया। वैष्णव ने कहा, यह यूनिट सीजी पावर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशंस लिमिटेड ने अमेरिका की रेनेसास इलेक्ट्रॉनिक्स और थाईलैंड की स्टार्स माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स के साथ मिलकर करीब 7,600 करोड़ रुपये के निवेश से लगाई है। इस परियोजना को भारत सेमीकंडक्टर मिशन से 50% वित्तीय सहयोग भी मिलेगा। भारत की सेमीकंडक्टर यात्रा का बड़ा मील का पत्थर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आज भारत की सेमीकंडक्टर यात्रा का बड़ा मील

का पत्थर है। मैंने माइक्रोन, कैन्स और धोलेरा के प्लांट्स भी देखे हैं। सभी जगह तेजी से काम हो रहा है। यह सपना अब हकीकत बनता दिख रहा है। भारत सेमीकंडक्टर मिशन सिर्फ फैक्टरियों पर नहीं, बल्कि टैलेंट तैयार करने पर भी जोर दे रहा है। वैश्विक स्तर पर 2032 तक लगभग 10 लाख विशेषज्ञों की कमी होने का अनुमान है। इस गैप को भरने के लिए भारत ने 270 विश्वविद्यालयों से साझेदारी की है, जहां छात्रों को दुनिया के सबसे एडवांस्ड चिप डिजाइन टूल्स उपलब्ध कराए गए हैं। वर्ष 2025 में ही छात्रों ने 12 लाख डिजाइन घंटे पूरे किए और 17 संस्थानों ने चिप डिजाइन कर उसे उत्पादन के अंतिम चरण तक पहुंचा दिया। 2021 में शुरू हुई थी सेमीकंडक्टर योजना केंद्र सरकार ने दिसंबर 2021 में 76,000 करोड़ रुपये की सेमीकंडक्टर योजना शुरू की थी। अब तक चार बड़ी परियोजनाओं को मंजूरी मिल चुकी है। इनमें धोलेरा (असम) और साणंद (गुजरात) शामिल हैं। जल्द ही इनसे 1.5 लाख करोड़ रुपये का निवेश और करीब 7 करोड़ चिप प्रतिदिन उत्पादन क्षमता हासिल होगी। सरकार ने भारत सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएम) के तहत चार और सेमीकंडक्टर परियोजनाओं को मंजूरी दी है, जिनमें से दो ओडिशा में और एक–एक आंध्र प्रदेश और पंजाब में होंगी।

संक्षिप्त

कैसे ध्यान सिंह बने ध्यानचंद? देश मना रहा 120वीं जयंती; हॉकी के जादूगर के बारे में 10 बातें

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद ने तीन ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। 1928, 1932 और 1936 ओलंपिक में उनके रहते हुए टीम ने कमाल किया था और स्वर्ण पदक जीतने में सफलता पाई थी। उनकी गोल करने की क्षमता के आगे विपक्षी टीम बेबस नजर आती थी। वह सिर्फ दूसरे छोर से ध्यानचंद को देखते ही रह जाते थे। हॉकी में ध्यानचंद को वही मुकाम हासिल है, जो क्रिकेट में डॉन ब्रैडमैन

को और फुटबॉल में पेले को है। आज शुक्रवार (29 अगस्त 2025) को हॉकी के जादूगरश मेजर ध्यानचंद की 120वीं जयंती है। 29 अगस्त 1905 को इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में जन्मे ध्यानचंद की जयंती पर हर साल देश में 29 अगस्त को खेल दिवस मनाया जाता है। भारत के इस महान खिलाड़ी के बारे में हम आपको 10 अनोखी बातें बता रहे हैं... ध्यानचंद 16 साल की उम्र में भारतीय सेना में भर्ती हुए। भर्ती होने के बाद उन्होंने हॉकी खेलना शुरू किया। ध्यानचंद काफी अभ्यास किया करते थे। रात को उनके प्रैक्टिस सेशन को चांद निकलने से जोड़कर देखा जाता। इसलिए उनके साथी खिलाड़ियों ने उनके नाम के आगे श्चंदश लगा दिया। असल में ध्यानचंद का असली नाम ध्यान सिंह था। 1928 में एम्सटर्डम में हुए ओलिंपिक खेलों में वह भारत की ओर से सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बने। उस टूर्नामेंट में ध्यानचंद ने 14 गोल किए। उस समय एक स्थानीय समाचार पत्र में लिखा था, श्यह हॉकी नहीं बल्कि जादू था और ध्यान चंद हॉकी के जादूगर हैं। ध्यानचंद ने कई यादगार मैच खेले, लेकिन एक मैच था जो उन्हें सबसे ज्यादा पसंद था। ध्यान चंद ने बताया कि 1933 में कलकत्ता कस्टम्स और झांसी हीरोज के बीच खेला गया बिगटन क्लब फाइनल उनका सबसे ज्यादा पसंदीदा मुकाबला था। ध्यानचंद हॉकी के इस कदर दीवाने थे कि वह पेड़ से हॉकी के आकार की लकड़ी काटकर उससे खेलना शुरू कर देते थे। रात भर वह हॉकी खेलते रहते थे। उनको हॉकी के आगे कुछ याद नहीं रहता था। हॉकी के सामने वह पढ़ाई को भी भूल जाते थे। 1932 के ओलिंपिक फाइनल में भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका को 24–1 से हराया था। उस मैच में ध्यानचंद ने आठ गोल किए थे। उनके भाई रूप सिंह ने 10 गोल किए थे। मेजर ध्यानचंद जब खेला करते थे तब लोग उनके हॉकी स्टिक के बारे में सोचते थे। लोगों को लगता था कि उनके स्टिक में कहीं चुम्बक तो नहीं लगा है, जो इतने रफ्तार से दनादन गोल कर देते हैं। हिटलर ने खुद ध्यानचंद को जर्मन सेना में शामिल कर एक बड़ा पद देने की पेशकश की थी, लेकिन उन्होंने भारत में ही रहना पसंद किया। अपनी आत्मकथा श्गोलश में उन्होंने लिखा था, आपको मालूम होना चाहिए कि मैं बहुत साधारण आदमी हूं। एक मुकाबले में ध्यानचंद गोल नहीं कर पा रहे थे तो उन्होंने मैच रेफरी से गोल पोस्ट के आकार के बारे में शिकायत की। हैरानी की बात है कि पोस्ट की चौड़ाई अंतरराष्ट्रीय मापदंडों के अनुपात में कम थी। ध्यानचंद के नाम पर देश में खेल रत्न अवॉर्ड दिया जाता है।

उर्जित पटेल को आईएमएफ में बड़ी जिम्मेदारी

आरबीआई गवर्नर के रूप में किया था शानदार काम

एजेंसी

नई दिल्ली। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के पूर्व गवर्नर उर्जित पटेल को इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड में एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर के रूप में नियुक्त किया गया है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर के तौर पर उनके कार्यकाल को देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उनकी यह नियुक्ति तीन वर्षों के लिए होगी। अप्वाइंटमेंट कमेटी ऑफ कैबिनेट की सहमति के बाद उर्जित पटेल को इस बेहद महत्वपूर्ण पद के लिए चुना गया और केंद्र सरकार के 28 अगस्त के नोटिफिकेशन में इसकी

जानकारी दी गई। उन्होंने दिसंबर 2018 में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर के पद से इस्तीफा दिया था। उनका कार्यकाल सितंबर 2019 तक था, लेकिन इसके पहले ही उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। वे एनआईपीएफपी के चेयरमैन के रूप में भी काम कर चुके हैं।

6 महीने में बुरी तरह प्रभावित होगा एक चौथाई कपड़ा निर्यात

कपास पर केंद्रीय फैसले से मिलेगी राहत

एजेंसी

नई दिल्ली। अमेरिका के 50 फीसदी टैरिफ के कारण अगले छह महीने में भारत के कपड़ा निर्यात का करीब एक चौथाई हिस्सा बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि अमेरिका भारत के कपड़ा उद्योग के लिए सबसे बड़ा निर्यात बाजार है और निर्यातक ऑर्डर रद्द होने की समस्या से जूझ रहे हैं। 2024–25 में कपड़ा और परिधान क्षेत्र का आकार 179 अरब डॉलर होने का अनुमान है। इसमें 142 अरब डॉलर का घरेलू बाजार और 37 अरब डॉलर का निर्यात शामिल है। भारतीय वस्त्र उद्योग परिसंघ (सीआईटीआई) की महासचिव चंद्रिमा चटर्जी ने कहा, हम अगले छह महीनों में कम–से–कम 20–25 फीसदी की गिरावट की आशंका देख रहे हैं, क्योंकि निर्यात में 28 फीसदी गिरावट आ सकती है। इसमें मुख्य रूप से परिधान और मेड–अप उत्पाद शामिल हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लिखे पत्र में परिधान निर्यात संवर्धन परिषद (एईपीसी) के अध्यक्ष सुधीर सेखरी ने कहा, 50 फीसदी टैरिफ देश के कपड़ा और परिधान उद्योग के लिए गंभीर चिंता का विषय है। उच्च टैरिफ से अमेरिकी बाजार में भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता पर गंभीर असर पड़ेगा। इससे निर्यातकों और उपभोक्ताओं दोनों को नुकसान होगा। सेखरी ने कहा, हमारा उद्योग पहले से ही टैरिफ वृद्धि के प्रभावों का सामना कर रहा है। हम टैरिफ के प्रभाव को कम करने के लिए वैकल्पिक बाजारों और रणनीतियों की तलाश कर रहे हैं। साथ ही, कपड़ा और वाणिज्य मंत्रालय के साथ भी सक्रिय रूप से चर्चा कर रहे हैं। दोनों मंत्रालयों से सहयोग का आश्वासन मिला है। कपास पर केंद्र के फैसले से मिलेगी राहत विशेषज्ञों का कहना है, कपास के शुल्क मुक्त आयात को तीन महीने बढ़ाने से घरेलू कपड़ा उद्योग को कुछ राहत मिलने की उम्मीद है। चटर्जी ने कहा, हम बड़ी राहत महसूस कर रहे हैं। पहले दी गई छूट से कपास के लिए दिए जाने वाले नए ऑर्डरों पर कोई लाभ नहीं मिल रहा था, क्योंकि इसे भेजने में कम से कम 45–50 दिन लगते हैं। अब अपेक्षाकृत लंबी छूट से नए ऑर्डरों पर लाभ होगा। हीरा पॉलिश 30 फीसदी तक घटेगी कमाई 50 फीसदी टैरिफ से देश के प्राकृतिक हीरा पॉलिश उद्योग का चालू वित्त वर्ष में राजस्व 28–30 फीसदी कम होकर 12.50 अरब डॉलर रहने का अनुमान है। 2024–25 में

उद्योग का राजस्व 16 अरब डॉलर था। क्रिसिल रेटिंग्स ने एक रिपोर्ट में कहा, पिछले तीन वित्त वर्षों में प्राकृतिक हीरों की कीमतों और बिक्री की मात्रा में 40 फीसदी की गिरावट के बाद यह झटका आया है। रिपोर्ट के मुताबिक, टैरिफ की वजह से अमेरिका को निर्यात करना मुश्किल हो गया है। इसके दो कारण हैं। पहला...हीरा उद्योग का मुनाफा कम होने से ये अतिरिक्त टैरिफ देना बहुत कठिन है। दूसरा...मांग घटने से इसे सीधे ग्राहक पर डालना भी आसान नहीं होगा। जीएसटी 2.0 से कम होगा टैरिफ का असर फिच सॉल्यूशंस की कंपनी बीएमआई का मानना है कि प्रस्तावित जीएसटी सुधार से वस्तुओं पर कर की दर कम होगी। इससे आम लोगों को राहत मिलेगी। साथ ही, यह फैसला उपभोग को बढ़ावा देगा और टैरिफ के प्रभाव को खत्म कर सकता है।

पहली तिमाही में आरबीआई के अनुमान से ज्यादा रह सकती है वृद्धि दर, खपत और मांग से तय होगा भविष्य

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय अर्थव्यवस्था के बढ़ने की रफ्तार चालू वित्त वर्ष 2025–26 की पहली तिमाही में आरबीआई के 6.5 फीसदी के अनुमान से ज्यादा रह सकती है। वहीं, अन्य एजेंसियों ने वृद्धि दर इससे ज्यादा रहने का अनुमान लगाया है। इक्रा ने

पहली तिमाही के लिए 6.7 फीसदी का अनुमान दिया है। एसबीआई रिसर्च का अनुमान 6.8 से 7 फीसदी तक का है। रॉयटर्स के सर्वे के मुताबिक, पहली तिमाही की अर्थव्यवस्था की रफ्तार 6.7 फीसदी रह सकती है। सरकार पहली तिमाही के जीडीपी के आंकड़े शुक्रवार को शाम पांच बजे जारी करेगी। अमेरिका के 50 फीसदी टैरिफ लागू होने के बाद पहली तिमाही के मजबूत आंकड़ों से बाजार पूरे वित्त वर्ष की तस्वीर देखने की कोशिश करेगा। जीडीपी आंकड़ों में खास नजर निजी खपत और मांग पर होगी। वर्तमान स्थिति में यह देखना जरूरी होगा कि भारत ने निजी खपत और मांग के मोर्चे पर कैसा प्रदर्शन किया है। ऊंचे टैरिफ की वजह से घटते निर्यात के बीच अब घरेलू मांग एवं खपत ही अर्थव्यवस्था की मजबूत वृद्धि का समर्थन कर सकती है। पूंजीगत खर्च से अर्थव्यवस्था को मिलेगा सहारा सरकारी पूंजीगत खर्च में सालाना 52 फीसद की उल्लेखनीय वृद्धि ने पहली तिमाही में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया है। इस खर्च ने नौकरियों के सृजन, बुनियादी ढांचे के विकास, सीमेंट, स्टील और इंजीनियरिंग सामानों की मांग को प्रोत्साहित किया है। केंद्र सरकार का पूंजीगत खर्च 2.8 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जो पिछले साल की तुलना में काफी अधिक है। यह वृद्धि निजी क्षेत्र की निवेश में कमी को संतुलित करने में महत्वपूर्ण रहा है। ग्रामीण मांग और कृषि में सुधार की उम्मीद ग्रामीण क्षेत्रों में खपत में उछाल से शहरी मांग की कमजोरी संतुलित होने की उम्मीद है। अनुकूल मानसून और रिकॉर्ड फसल उत्पादन से ग्रामीण आय बढ़ी है, जिससे एफएमसीजी, कृषि उपकरण और ग्रामीण खुदरा क्षेत्र में तेजी आ सकती है। टैरिफ का आगे दिख सकता है असर पहली तिमाही टैरिफ से ज्यादा प्रभावित नहीं हुई है, इसलिए अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन मजबूत रह सकता है। दूसरी तिमाही से पूरा असर होगा।

नीरज खिताब से चूके, 85.01 मीटर के थ्रो से दूसरे स्थान पर रहे वेबर बने विजेता

एजेंसी

नीरज खिताब से चूके, लगातार तीसरी बार रहे उपविजेता भारत के स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा लगातार तीसरे साल डायमंड लीग फाइनल का खिताब अपने नाम करने में असफल रहे। नीरज इस दौरान संघर्ष करते नजर आए, लेकिन 85.01 मीटर के अपने सर्वश्रेष्ठ थ्रो से दूसरे स्थान पर रहे। नीरज 2022 में डायमंड लीग की ट्रॉफी अपने नाम कर चुके हैं, लेकिन 2023 और 2024 के बाद इस वर्ष भी वह उपविजेता रहे। जर्मनी जूलियन वेबर 91.51 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ खिताब अपने नाम करने में सफल रहे। नीरज ने छठे प्रयास में वापसी की और 85.01 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहे।

आठ शतक और 2775 रन... शुरुआती 55 वनडे मैचों में बनाए सर्वाधिक रन विराट और सचिन को पछाड़ा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय टीम के युवा बल्लेबाज शुभमन गिल बहुत जल्द एशिया कप में खेलते नजर आएंगे। नौ सितंबर से शुरू हो रहे आगामी टूर्नामेंट के लिए उन्हें भारतीय टीम का उपकप्तान बनाया गया है। गिल ने अपने वनडे करियर की शुरुआत बेहद प्रभावशाली अंदाज में की है। उन्होंने शुरुआती 55 वनडे मैचों में सर्वाधिक रन बनाकर विराट कोहली और सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ दिया। गिल ने कोहली–सचिन को पछाड़ा भारतीय क्रिकेट में हमेशा से ही युवा खिलाड़ियों की तुलना दिग्गजों से की जाती रही है। शुभमन गिल, विराट कोहली और सचिन तेंदुलकर. ..ये तीनों नाम आज की पीढ़ी से लेकर पुरानी पीढ़ी तक क्रिकेट प्रेमियों के बीच बहस का मुद्दा रहे हैं। आंकड़ों पर नजर डालें तो शुभमन गिल ने वनडे की सिर्फ 55 पारियों में 2775 रन बना दिए हैं। उनका औसत 59.04 है।

खास बात यह है कि गिल ने इस दौरान आठ शतक भी जड़े हैं, जो उनकी निरंतरता और बड़े स्कोर बनाने की क्षमता का प्रमाण है। वहीं, भारतीय टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने शुरुआती 55 वनडे पारियों में 2059 रन बनाए थे। उनका औसत 42.9 रहा और उन्होंने पांच शतक लगाए। ये आंकड़े साबित करते हैं कि कोहली ने भले ही धीमी शुरुआत की हो, लेकिन आगे चलकर वह दुनिया के सबसे बड़े चेज मास्टर बने और कई रिकॉर्ड तोड़े। इस लिस्ट में तीसरे स्थान पर क्रिकेट के भगवान सचिन तेंदुलकर हैं, जिन्होंने शुरुआती 55 पारियों में 1556 रन बनाए थे। उनका औसत 31.76 रहा और इस दौरान उन्होंने कोई शतक नहीं लगाया था। हाशिम अमला और इमाम–उल–हक पीछे छूटे अब बात करते हैं ओवरऑल रिकॉर्ड की तो गिल ने हाशिम अमला और इमाम–उल–हक जैसे दिग्गजों को पीछे छोड़ा है। वनडे की शुरुआती 55 पारियों में दूसरे स्थान पर दक्षिण अफ्रीका के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज हाशिम अमला हैं। अमला ने शुरुआती 55 मैचों के बाद 54 पारियों में 2713 रन बनाए थे। उनका औसत 55.37 का रहा और उन्होंने नौ शतक जड़े थे। वहीं, पाकिस्तान के इमाम–उल–हक ने शुरुआती 55 मैचों की 55 पारियों में 2539 रन बनाए थे।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक **धर्मेन्द्र सिंह** द्वारा शौर्य प्रिंटर्स, शिवपुरी कालोनी, निकट बांसमण्डी चौराहा, लखनऊ से मुद्रित तथा एमआईजी-47, सेक्टर-ई, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक-अंजू सिंह (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) Email-lkojunction@gmail.com. RNI NO.-UPHIN/2015/64743